International Journal of Education and Science Research Review
Volume-11, Issue-1 January-February-2024 E-ISSN 2348-6457
(Peer-Reviewed, Open Access, Fully Refereed International Journal) P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org Impact Factor - 7.02 Email- editor@ijesrr.org

उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षणिक आत्म–प्रभावकारिता और कैरियर निर्णय लेने के संबंध में मनोवैज्ञानिक कल्याण

SEEMA KUMARI,
Research Scholar
Radha Govind University, Ramgarh,
Ramargh, Jharkhand

Dr. Mamta Sharma
Asstt. Prof. Deptt. of Education
Radha Govind University, Jharkhand

सार

आत्म–सम्मान और शैक्षिक समायोजन दोनों एक–दूसरे को प्रभावित कर सकते हैं और प्रभावित हो सकते हैं, एक स्वस्थ आत्म–सम्मान सीखने की प्रक्रिया पर रचनात्मक दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करके, प्रेरणा और दृढ़ता को बढ़ाकर और शिक्षार्थी में आत्म–प्रभावकारिता और लचीलेपन की भावना पैदा करने में मदद करके शैक्षणिक समायोजन पर लाभकारी प्रभाव डाल सकता है। दूसरी ओर, खराब शैक्षणिक समायोजन, जैसे शैक्षणिक समस्याएं या सामाजिक बाधाएं, किसी के आत्म–सम्मान पर हानिकारक प्रभाव डाल सकती हैं, जिससे आत्मविश्वास खो सकता है, शैक्षणिक अपेक्षाएं कम हो सकती हैं और भावनात्मक पीड़ा हो सकती है। माध्यमिक विद्यालय के बच्चों का मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य वर्तमान अध्ययन का प्राथमिक फोकस है। सामान्य आयु सीमा 14 से 17 वर्ष के बीच है। यह जीवन का एक विकासात्मक चरण है, इस अवधि के दौरान बच्चे विभिन्न परिवर्तनों से गुजरते हैं। इन बदलावों में युवावस्था में बदलाव के साथ–साथ माता–पिता–बच्चे की बातचीत, स्कूल, सहपाठियों और संज्ञानात्मक और भावनात्मक क्षमताओं को प्रभावित करने वाले बदलाव शामिल हैं। ये बदलाव अनुभूति, भावना और आचरण के 19 विकास को प्रभावित करते हैं ।

मुख्य शब्द: उच्च माध्यमिक विद्यालय, मनोवैज्ञानिक

परिचय

आत्म–सम्मान और शैक्षणिक समायोजन दो परस्पर संबंधित अवधारणाएँ हैं जो लोगों के शैक्षणिक और व्यक्तिगत विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। यह किसी व्यक्ति के मूल्य और स्वयं के महत्व की भावना के बारे में किसी भी और सभी आकलन और विचारों को संदर्भित करता है। इसमें किसी व्यक्ति की अपनी क्षमताओं, आकर्षण, उपलब्धियों और दुनिया में स्थिति के बारे में विचार और भावनाएं शामिल हैं। दूसरी ओर, शैक्षिक समायोजन लोगों की शैक्षिक वातावरण में अनुकूलन करने और फलने–फूलने की क्षमता है। इस क्षमता में शैक्षणिक सफलता, सामाजिक एकीकरण और भावनात्मक कल्याण शामिल है। विकलांग छात्रों के लिए स्कूल में समायोजन एक चुनौती हो सकता है।

आत्म–सम्मान और शैक्षिक समायोजन दोनों एक–दूसरे को प्रभावित कर सकते हैं और प्रभावित हो सकते हैं, एक स्वस्थ आत्म–सम्मान सीखने की प्रक्रिया पर रचनात्मक दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करके, प्रेरणा और दृढ़ता को बढ़ाकर और शिक्षार्थी में आत्म–प्रभावकारिता और लचीलेपन की भावना पैदा करने में मदद करके शैक्षणिक समायोजन पर लाभकारी प्रभाव डाल सकता है। दूसरी ओर, खराब शैक्षणिक समायोजन, जैसे शैक्षणिक समस्याएं या सामाजिक बाधाएं, किसी के आत्म–सम्मान पर हानिकारक प्रभाव डाल सकती हैं, जिससे आत्मविश्वास खो सकता है, शैक्षणिक अपेक्षाएं कम हो सकती हैं और भावनात्मक पीड़ा हो सकती है।

बच्चे और किशोर अपने आत्म–सम्मान में महत्वपूर्ण बदलावों से गुजरते हैं और इन प्रारंभिक वर्षों के दौरान वे अपने शैक्षिक वातावरण के साथ कितनी अच्छी तरह तालमेल बिठाते हैं। बच्चों के सामने आने वाली शैक्षणिक बाधाओं को सफलतापूर्वक प्रबंधित करने, अपने सहपाठियों और प्रशिक्षकों के साथ मजबूत संबंध बनाने और उपयोगी सीखने के अनुभवों में भाग लेने के लिए, उनके लिए एक स्वस्थ आत्म–सम्मान होना आवश्यक है। जिन छात्रों की आत्म–धारणा सकारात्मक होती है,

उनमें मौके लेने, जरूरत पड़ने पर सहायता मांगने और विकास की मानसिकता रखने की संभावना अधिक होती है, जो उन्हें सीखने और सुधार जारी रखने में सक्षम बनाती है, भले ही उन्हें लगे कि वे अपनी पूरी क्षमता तक पहुंच गए हैं।

"यह उद्धरण अक्सर प्रसिद्ध अमेरिकी शिक्षक बेंजामिन फ्रैंकलिन का है। शिक्षा यह निर्धारित करने में सबसे महत्वपूर्ण कारक है कि कोई व्यक्ति अपनी क्षमताओं, प्रतिभाओं और क्षमताओं को पहचानने में सक्षम होगा या नहीं, ये सभी उनके जीवन के लिए उपयुक्त नौकरी पथ चुनने की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण कारक हैं। कि किसी व्यक्ति के प्रदर्शन की गुणवत्ता उनके व्यक्तिगत विकास में एक महत्वपूर्ण घटक है अधिक से अधिक व्यक्तिगत उन्नति की इच्छा प्राथमिक कारण है जो किसी व्यक्ति को अपने प्रदर्शन में अधिक प्रयास करने के लिए प्रेरित करती है। आज हम जिस दुनिया में रहते हैं वह और अधिक प्रतिस्पर्धी होती जा रही है, कि किसी व्यक्ति के प्रदर्शन की गुणवत्ता उनकी व्यक्तिगत प्रगति में एक महत्वपूर्ण कारक है। विद्यार्थियों की शैक्षणिक सफलता भारत की संपूर्ण शैक्षिक प्रणाली का प्राथमिक फोकस है, जो देश की विशाल आबादी पर केंद्रित है। शैक्षणिक संस्थान छात्रों को उनके लिए उपयुक्त पेशेवर मार्ग चुनने में मदद करने, मार्गदर्शन करने या निर्देशित करने में बहुत समय और प्रयास खर्च करते हैं और उनके शैक्षणिक प्रयासों में बेहतर सफलता प्राप्त करने के लिए, उनके श्रम का फल सहायता, मार्गदर्शन के लिए नियोजित किया जाता है। किसी व्यक्ति के लिए अपनी रुचि का आकलन करने और फिर अपने करियर के निर्माण में अपनी रुचि को आगे बढ़ाने के लिए सही दिशा प्राप्त करना बेहद फायदेमंद है। शिक्षकों और अभिभावकों की अपने छात्रों की रुचि के क्षेत्रों को निर्धारित करने और उन्हें भविष्य में और करियर विकास में उनका अनुसरण करने के लिए प्रेरित करने में महत्वपूर्ण भूमिका होती है, जो एक सफल और तनाव मुक्त जीवन जीने के लिए आवश्यक है।

आज दुनिया में तकनीकी प्रगति की तीव्र गति के कारण, शैक्षिक पूर्वापेक्षाओं को ध्यान में रखते हुए एक पेशेवर मार्ग पर निर्णय लेने की प्रक्रिया पहले की तुलना में कहीं अधिक कठिन है। जब अन्य उम्र के व्यक्तियों की तुलना की जाती है, तो दुनिया की युवा आबादी में 75.8 मिलियन बेरोजगार व्यक्तियों की बेरोजगारी दर अनुपातहीन रूप से उच्च थी। कि विश्व असाधारण प्रतिभा की कमी के युग में प्रवेश करने वाला है, जो आर्थिक विकास पर ब्रेक लगा सकता है और अंततः, श्रमिक चिंताओं को संबोधित करने के तरीके को प्रभावित कर सकता है। कि जब अपने भविष्य के करियर के बारे में निर्णय लेने की बात आती है तो दुनिया भर के माध्यमिक विद्यालयों में युवाओं को कठिन विकल्पों का सामना करना पड़ता है। जब कोई व्यक्ति पेशेवर मार्ग पर निर्णय लेने की प्रक्रिया में होता है, तो वह विभिन्न प्रकार के तत्वों से प्रभावित होता है, जिसमें वह वातावरण जिसमें वे रहते हैं, उनकी अपनी व्यक्तिगत क्षमताएं और उनके द्वारा प्राप्त शिक्षा का स्तर शामिल है।

माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों को कैरियर सहायता प्रदान नहीं की जाती है, तो वे अक्सर अपने भविष्य के करियर के बारे में निर्णय लेने के बारे में अनिश्चित होते हैं। उदाहरण के लिए, अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (आईएलओ) स्कूली पाठ्यक्रमों को दोषी ठहराता है जो काम की दुनिया और पेशेवर रास्ते पर निर्णय लेने की प्रक्रिया के बारे में युवाओं में पर्याप्त समझ की कमी के लिए शिक्षार्थियों की प्रारंभिक कैरियर की तैयारी को पर्याप्त रूप से संबोधित नहीं करते हैं। अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन भी एक चेतावनी जारी करता है कि अफ्रीकी देशों में युवाओं के लिए रोजगार बाजार की प्रतिकूल स्थिति निराशा पैदा करती है, जो बदले में अप्रिय सामाजिक व्यवहार (असुरक्षा, डकैती और नशीली दवाओं की तस्करी) का एक सूत्र बन जाती है, साथ ही एक स्रोत भी बन जाती है। उनके समुदायों में सामाजिक–राजनीतिक प्रतिस्पर्धा।

अध्ययन के उद्देश्य

1. ग्रामीण वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य की जांच करना।
2. शहरी वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य की जांच करना।

साहित्य की समीक्षा

वाह्युनिंग्ट्यास फ़िरदौस (2020) यह अध्ययन यह निर्धारित करने के लिए है कि वरिष्ठ हाई स्कूल के छात्रों में आत्म–प्रभावकारिता और उनके भविष्य के करियर पर निर्णय लेते समय उनके सामने आने वाली चुनौतियों के बीच कोई संबंध है या नहीं, साथ ही क्या ये चुनौतियाँ छात्रों के लिए अद्वितीय हैं या नहीं। जो निजी स्कूलों में पढ़ने वाले छात्रों के विपरीत सार्वजनिक स्कूलों में जाते हैं। इसके अलावा, अध्ययन इस बात की जांच करेगा कि क्या ये चुनौतियाँ निजी स्कूलों में जाने वाले छात्रों के विपरीत सार्वजनिक स्कूलों में जाने वाले छात्रों के लिए अद्वितीय हैं या नहीं। प्रतिभागियों की आत्म–प्रभावकारिता को स्वतंत्र चर के रूप में उपयोग किया गया था, जबकि करियर पथ पर निर्णय लेने से जुड़ी चुनौतियों का उपयोग आश्रित चर के रूप में किया गया था। इस जांच के प्रयोजनों के लिए, एक मात्रात्मक दृष्टिकोण को उचित रणनीति के रूप में चुना गया था। अध्ययन के प्रयोजन के लिए, सेमारंग के सीनियर हाई स्कूल एन और एस में भाग लेने वाले 193 वरिष्ठ नागरिकों से प्रतिनिधि नमूने लिए गए। विश्लेषण अपने निष्पादन में इन नमूनों पर निर्भर था। विश्लेषण के लिए आवश्यक जानकारी संकलित करने के लिए इस शोध के दौरान एक आत्म–प्रभावकारिता उपाय और एक पेशेवर निर्णय लेने की कठिनाइयों वाले प्रश्नावली का उपयोग किया गया था। पेशेवर निर्णय लेने वाले मुद्दों की प्रश्नावली में आइटम–कुल सहसंबंध था जो 0.980 से 0.768 तक था, और इसकी आंतरिक स्थिरता 0.960 थी। प्रश्नावली में 38 विभिन्न प्रश्न शामिल थे। स्व–प्रभावकारिता पैमाने पर कुल 29 प्रश्न थे, और इसकी आंतरिक स्थिरता 0.911 पाई गई। आइटम–कुल सहसंबंध 0.399 से 0.614 तक था, जिसमें0.614 औसत के रूप में कार्य करता था। स्वतंत्र–नमूने टी–टेस्ट के साथ–साथ पियर्सन से उत्पन्न एक द्विचर सहसंबंध का उपयोग इस जांच के दौरान एकत्र किए गए डेटा का आकलन करने के लक्ष्य के लिए किया गया था। उत्पाद क्षण विश्लेषण के निष्कर्षों के अनुसार, जो महत्व स्तर च=0. 000 (च0.01) के साथ त = –0.528 लौटा, एन समूह में वरिष्ठ हाई स्कूल के छात्रों के लिए औसत मूल्य, जो 66.14 था, औसत से अधिक था एस समूह में वरिष्ठ हाई स्कूल के छात्रों के लिए मूल्य, जो 62.44 था। दूसरे शब्दों में, एन समूह का माध्य मान एस समूह की तुलना में काफी अधिक था। यह दो समूहों के औसत मूल्यों के बीच अंतर को देखकर स्थापित किया गया था। निष्कर्षों के अनुसार, पेशेवर निर्णय लेने से जुड़ी चुनौतियों के संदर्भ में सार्वजनिक और निजी वरिष्ठ उच्च विद्यालयों के बीच कोई स्पष्ट अंतर नहीं था।

एवलिन सैंड्रा (2021) लोग पेशेवर विकल्प बनाने की प्रक्रिया से गुजरते हैं जब उन्हें यह एहसास होता है कि उपयुक्त मार्ग चुनना उनका कर्तव्य और जिम्मेदारी है और उसका पालन करने के साधन हैं। इस अहसास के परिणामस्वरूप वे इस प्रक्रिया को पूरा करने के लिए प्रेरित होते हैं। आत्म–प्रभावकारिता को इस विश्वास तक सीमित किया जा सकता है कि कोई व्यक्ति अपने कर्तव्यों या प्रतिबद्धताओं को पूरा करने में सक्षम है। इस शोध का लक्ष्य यह मूल्यांकन करना था कि जकार्ता में व्यावसायिक हाई स्कूलों के हाल के स्नातकों की भविष्य में किस प्रकार की नौकरियों के बारे में निर्णय लेने की प्रक्रिया में आत्म–प्रभावकारिता की भूमिका थी। अनुसंधान जो काम पर निर्णय लेने के लिए किसी व्यक्ति की क्षमता में आत्मविश्वास के महत्व को प्रकट करता है, विभिन्न अध्ययनों की नींव है जो जकार्ता में व्यावसायिक स्कूलों के स्नातकों के बीच बेरोजगारी की उच्च दर को उजागर करता है। ये अध्ययन जकार्ता में व्यावसायिक स्कूलों के स्नातकों के बीच बेरोजगारी की उच्च दर पर जोर देते हैं। ये अध्ययन जकार्ता के व्यावसायिक संस्थानों के स्नातकों के बीच प्रचलित बेरोजगारी के खतरनाक उच्च प्रतिशत पर प्रकाश डालते हैं। सभी प्रतिभागियों की उम्र 18 से 21 वर्ष के बीच थी, और उन सभी ने जकार्ता के व्यावसायिक उच्च विद्यालयों से अपने डिप्लोमा प्राप्त किए थे। कुल मिलाकर, 118 अलग–अलग महिला प्रतिभागी और 47 अलग–अलग पुरुष प्रतिभागी थे। सुविधा नमूनाकरण वह दृष्टिकोण है जो इस जांच के प्रयोजनों के लिए अपनाया गया था। जकार्ता में व्यावसायिक उच्च विद्यालयों के स्नातकों के बीच कैरियर निर्णय लेने की प्रक्रिया में आत्म–प्रभावकारिता का काफी अनुकूल प्रभाव पाया गया। डेटा से पता चला कि निर्धारण गुणांक (आर वर्ग) 0.151 था, और पी मान 0.000 (0.05) था। यह दर्शाता है कि जहां अन्य विशेषताओं का किसी व्यक्ति के रोजगार के संबंध में निर्णय लेने पर 849% समय महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है, वहीं आत्म–प्रभावकारिता का उन अन्य पहलुओं की तुलना में केवल 15% समय ही महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।

जेलेना दोस्तानीक (2021) हमने हाई स्कूल के बच्चे कैसे निर्णय लेते हैं, वे अपने लिए करियर का रास्ता चुनने की क्षमता में कितना आत्मविश्वास महसूस करते हैं और उनके जीवन में कितना व्यावसायिक लचीलापन है, इसके बीच संबंधों पर गौर किया। इसके अलावा, हमने इस बात पर भी गौर किया कि क्या इन तीन अवधारणाओं के बीच संबंध किसी व्यक्ति के लिंग से प्रभावित होते हैं या नहीं। कुल मिलाकर, सर्बिया में अपने अंतिम वर्ष में 216 हाई स्कूल सीनियर्स को कार्यस्थल में निर्णय लेने और अनुकूलनशीलता के संदर्भ में उनकी क्षमताओं के बारे में प्रश्नावली भरने के लिए कहा गया था। संरचनात्मक समीकरण मॉडलिंग के परिणाम दर्शाते हैं कि आश्रित शैली और कैरियर अनुकूलनशीलता के बीच एक नकारात्मक संबंध है और साथ ही सहज और तर्कसंगत शैलियों के बीच एक सकारात्मक संबंध है। इसके अतिरिक्त, तर्कसंगत और सहज शैलियों के बीच एक सकारात्मक संबंध है। कैरियर निर्णय लेने में आत्म–प्रभावकारिता इन रिश्तों के बीच मध्यस्थ के रूप में कार्य करती है, जो सहज और तर्कसंगत निर्णय लेने के दृष्टिकोण के बीच सकारात्मक सहसंबंध को समझाने में भी मदद करती है। किसी की लचीली नौकरी करने की क्षमता का एकमात्र पहलू जिस पर तर्कसंगत दृ ष्टिकोण का सीधा प्रभाव पड़ता था। एक मार्ग पर, जो कैरियर अनुकूलन क्षमता पर आत्म–प्रभावकारिता का प्रतिगमन भार था, शोधकर्ता के लिंग का प्रभाव पड़ा, और यह प्रभाव महत्वपूर्ण था। पुरुष छात्रों की आत्म–प्रभावकारिता के स्तर और उनके लिए उपलब्ध पेशे के विकल्पों के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं पाया गया। निष्कर्षों से पता चलता है कि कैरियर परामर्शदाताओं को छात्रों से उनके लिंग के आधार पर अलग–अलग दृष्टिकोण रखना चाहिए, और अनुकूलन और पेशेवर निर्णय लेने की प्रक्रियाओं पर लिंग के प्रभाव पर अतिरिक्त शोध किया जाना चाहिए। विशेष रूप से, निष्कर्ष बताते हैं कि कैरियर परामर्शदाताओं को महिला छात्रों की तुलना में पुरुष छात्रों से अलग तरीके से संपर्क करना चाहिए।

आलिया कामिल (2022) बचपन से वयस्कता तक का सफर व्यक्ति के विकास के प्रमुख चरण के दौरान होता है जिसे किशोरावस्था के रूप में जाना जाता है। यह परिवर्तन बचपन से वयस्कता तक होता है। यह संभव है कि वयस्कों में संक्रमण के दौरान अधिकांश किशोरों को जिन बदलावों और चुनौतियों से गुजरना पड़ता है, उनका उनकी आत्म–प्रभावकारिता की भावना पर प्रभाव पड़ेगा, जो मनोवैज्ञानिक कल्याण का एक अनिवार्य घटक है। यह मामला है क्योंकि आत्म–प्रभावकारिता मनोवैज्ञानिक कल्याण का एक अनिवार्य घटक है। इस अध्ययन का उद्देश्य है (1) आत्म–प्रभावकारिता के स्तरों का आकलन करना जो किशोरों द्वारा स्वयं रिपोर्ट किए जाते हैं और (2) इन स्तरों और किशोरों के मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य के बीच संबंधों की जांच करना है। इन दोनों उद्देश्यों को प्रश्नावली और साक्षात्कार के उपयोग के माध्यम से पूरा किया जाएगा। कार्यप्रणाली में शामिल हैंरू इस अध्ययन के लक्ष्यों को उपयोगी तरीके से पूरा करने के लिए, वर्णनात्मक–सहसंबंधात्मक विश्लेषण नामक एक विधि लागू की गई थी। व्यक्तियों द्वारा ऑनलाइन प्रश्नावली पर दिए गए उत्तरों का उपयोग स्नोबॉल नमूनाकरण दृष्टिकोण का उपयोग करके प्रतिभागियों को चुनने के लिए किया गया था। वां शोध अध्ययन में कुल 320 किशोरों को शामिल किया गया था। उनकी उम्र 12 से 19 साल के बीच थी और नमूने में 120 पुरुष और 200 लड़कियाँ थीं। इस जांच में उपयोग की गई जानकारी दो अलग–अलग मापों से उत्पन्न हुई है, अर्थात् मनोवैज्ञानिक कल्याण माप, जिसमें 42 प्रश्न शामिल हैं, और सामान्य आत्म–प्रभावकारिता पैमाना, जिसमें 10 प्रश्न शामिल हैं। डेटा का विश्लेषण करने की प्रक्रिया के हिस्से के रूप में वर्णनात्मक आँकड़े और सहसंबंधी अध्ययन दोनों किए गए। निष्कर्षों के अनुसार, अधिकांश किशोरों में मनोवैज्ञानिक कल्याण का संतोषजनक स्तर (68.1%) था, साथ ही कथित आत्म–प्रभावकारिता का संतोषजनक स्तर (47.8%) था। यह प्रदर्शित किया गया है कि कथित आत्म–प्रभावकारिता और मनोवैज्ञानिक कल्याण के बीच, त =.370 के मान और 0.01 के महत्व स्तर के साथ एक सकारात्मक संबंध है।

तमकीन सलीम (2017) इस तथ्य के परिणामस्वरूप कि छात्रों से अपेक्षा की जाती है कि वे स्कूल में रहने के दौरान ही अपने पेशेवर भविष्य के बारे में निर्णय लें, आज दुनिया में करियर निर्णय लेने, नौकरी चयन में काफी रुचि हो गई है। और करियर में खुशी. ऐसा इस तथ्य के कारण है कि छात्रों को ये विकल्प तब चुनने होते हैं जब वे स्कूल में रहते हैं। श्रम बाजार में महत्वपूर्ण उथल–पुथल हुई है, जिसके परिणामस्वरूप करियर विकल्पों और रोजगार की संभावनाओं के बारे में अनिश्चितता पैदा हुई है। इस अप्रत्याशितता के कारण रोजगार चाहने वाले लोगों की संख्या में वृद्धि हुई है। इस वजह से, पेशेवर पहचान बनाने की प्रक्रिया पहले की तुलना में काफी कठिन है। यह अतीत की स्थिति के विपरीत है। स्वयं के

बारे में सकारात्मकता एक व्यक्ति को सार्थक लक्ष्य निर्धारित करने और समय के साथ अपने लिए सफलता और कल्याण की भावना बनाए रखने की स्थिति में लाने में सक्षम बनाती है।

अनुसंधान क्रियाविधि

वर्तमान कार्य के लिए शोधकर्ता द्वारा मानक सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया। जनसंख्या और अध्ययन के नमूने की व्याख्या करना जारी रखता है। नमूने का चयन तीन चरणों में अनुपातहीन यादृच्छिक नमूनाकरण तकनीक द्वारा किया गया था। अध्ययन में प्रयुक्त शोध उपकरणों का विवरण भी दिया गया है। शोधकर्ता द्वारा निर्णय लेने की क्षमता के पैमाने का निर्माण किया गया था, जिसका विवरण एवं प्रक्रिया भी प्रस्तुत अध्याय में दी गई है। यह आगे डेटा संग्रह की प्रक्रिया और उसके संगठन पर चर्चा करता है। डेटा का विश्लेषण करने के लिए उपयोग की जाने वाली विभिन्न सांख्यिकीय तकनीकों का भी इस अध्याय में उल्लेख किया गया है।

उचित योजना और सोच के बिना कोई भी शोध कार्य नहीं किया जा सकता है। यह योजना वास्तव में अनुसंधान की पूरी योजना का एक ब्लू प्रिंट है। निर्णायक परिणामों वाला एक अच्छा शोध तभी किया जा सकता है जब उपयोग की जाने वाली विधियाँ और प्रक्रियाएँ सुव्यवस्थित हों। वर्तमान शोध को संचालित करने के लिए चुने गए डिज़ाइन, अपनाई गई विधि और अपनाई गई प्रक्रिया पर केंद्रित है। यह अध्याय निम्नलिखित पर बल देता है।

डेटा विश्लेषण

डेटा का विश्लेषण करने के लिए पैरामीट्रिक सांख्यिकीय तकनीकों को चुना गया जिसमें सहसंबंध, प्रतिगमन विश्लेषण और महत्व के अंतर का परीक्षण शामिल है। परिकल्पना के आधार पर विश्लेषण किया गया और फिर विश्लेषण के आधार पर व्याख्या की गई। बिहार बोर्ड और सरकारी और रोहतास जिले के निजी स्कूलों में पढ़ने वाले वरिष्ठ माध्यमिक छात्रों की कैरियर परिपक्वता, भावनात्मक परिपक्वता, निर्णय लेने की क्षमता और आत्म–प्रभावकारिता पर एकत्र आंकड़ों के विश्लेषण और व्याख्या से संबंधित है। अध्ययन की शुरुआत में निर्धारित उद्देश्यों और उसके बाद मान्यताओं और परिकल्पनाओं के अनुसार विश्लेषण किया गया था। प्रभावी निष्कर्ष निकालने के लिए उपयुक्त सांख्यिकीय तकनीकों का उपयोग करके अनुसंधान डेटा का विश्लेषण और व्याख्या की गई थी।

- उत्तरदाताओं की जनसांख्यिकीय प्रोफ़ाइल
- सामान्यता और वर्णनात्मक सांख्यिकी का परीक्षण
- आनुमानिक आँकड़े

इन सभी अनुभागों का विवरण इस प्रकार है–

उत्तरदाताओं की जनसांख्यिकीय प्रोफ़ाइल

तालिका 1: लिंग के आधार पर छात्रों का वितरण

लड़के	लड़कियाँ	कुल
200	200	400
(50%)	(50%)	(100%)

तालिका 1 वरिष्ठ माध्यमिक छात्रों के लिंगवार वितरण का विवरण प्रदान करती है। तालिका 4.1 से स्पष्ट है कि 50

प्रतिशत वरिष्ठ माध्यमिक छात्र लड़के थे और 50 प्रतिशत वरिष्ठ माध्यमिक छात्र लड़कियाँ थीं। यह स्पष्ट है कि लिंग के आधार पर, उत्तरदाताओं को समान रूप से वितरित किया गया था।

तालिका 2: स्कूल के प्रकार के आधार पर छात्रों का वितरण

सरकार	निजी	कुल
200	200	400
(50%)	(50%)	(100%)

तालिका 2 स्कूलों के प्रकार के आधार पर वरिष्ठ माध्यमिक छात्रों के वितरण का विवरण प्रदान करती है। तालिका 2 दर्शाती है कि 50 प्रतिशत वरिष्ठ माध्यमिक छात्र सरकारी थे। और निजी स्कूल और 50 प्रतिशत वरिष्ठ माध्यमिक छात्र बिहार बोर्ड स्कूलों से थे। कि उत्तरदाताओं को फिर से स्कूल के प्रकार के आधार पर समान रूप से वितरित किया गया।

सामान्यता और वर्णनात्मक सांख्यिकी का परीक्षण

सामान्यता परीक्षणों का उपयोग आम तौर पर यह पहचानने के लिए किया जाता है कि डेटा का दिया गया सेट वितरण में सामान्य है या नहीं, इसे पैरामीट्रिक विश्लेषण के लिए उपयोग करने के उद्देश्य से किया जाता है। सामान्यता निर्धारित करने के लिए सांख्यिकीय और ग्राफिकल दोनों तरीके हैं। जैसा कि नाम से पता चलता है, ग्राफिकल तरीकों में सामान्यता प्लॉट और हिस्टोग्राम शामिल होते हैं, जबकि सांख्यिकीय तरीकों में चिकनाई और कर्टोसिस के उपाय शामिल होते हैं। विभिन्न परिकल्पनाओं के परीक्षण के लिए विभिन्न सांख्यिकीय तकनीकों को सही ठहराने की दृष्टि से जांच में विभिन्न चर से संबंधित स्कोर वितरण की प्रकृति का अध्ययन किया गया है। नतीजतन, कैरियर परिपक्वता और अन्य भविष्यवक्ता चर पर स्कोर के संबंध में केंद्रीय प्रवृत्तियों, मानक विचलन और चिकनाई और कुर्टोसिस के संख्यात्मक निर्धारकों के उपायों पर काम किया गया। कुल 750 छात्रों के नमूने के ऐसे परिणामों का विवरण तालिका 3 में दर्ज किया गया है–

तालिका 3: निरंतर भविष्यवक्ता और मानदंड चर का माध्य, मानक विचलन, चिकनापन और कर्टोसिस

चर	एन	अर्थ	एसटीडी. विचलन	कोमलता	कुकुदता
कैरियर परिपक्वता के लिए दृष्टिकोण	400	30.09	6.476	-0.137	-0.457
कैरियर परिपक्वता के लिए योग्यता	400	27.19	9.781	0.177	-0.860
मानसिक स्वास्थ्य	400	26.20	7.499	0.252	-0.644
भावनात्मक प्रगति	400	25.06	7.306	0.355	-0.370

सामाजिक समायोजन	400	22.59	6.679	0.513	-0.041
व्यक्तित्व एकीकरण	400	21.37	7.244	0.702	0.254
आजादी	400	19.23	5.904	0.455	-0.071
निर्णय लेने की क्षमता	400	114.64	9.941	-0.096	1.87
आत्म प्रभावकारिता	400	76.21	9.370	-0.554	1.102

चिकनापन सामान्य वितरण से विकृति की डिग्री है, कर्टोसिस वितरण की पूंछ है। कि पूरी तरह से सामान्य वितरण में चिकनाई और कर्टोसिस दोनों के लिए शून्य अंक होता है। यदि चिकनाई का मान सकारात्मक है, तो इसका मतलब है कि डेटा सकारात्मक रूप से (दाएं) तिरछा है और यदि चिकनाई का मान नकारात्मक है तो यह नकारात्मक (बाएं) तिरछा है। कर्टोसिस के मामले में भी, सकारात्मक मान सकारात्मक कर्टोसिस का संकेत देता है और कर्टोसिस का नकारात्मक मान नकारात्मक कर्टोसिस का संकेत देता है। दोनों में से किसी के लिए स्वीकार्य मूल्य निर्धारित करना आसान नहीं है, वास्तविकता में पूरी तरह से सामान्य वितरण प्राप्त करना संभव नहीं है। एसपीएसएस जैसे कुछ सांख्यिकीय पैकेज दोनों यानी कर्टोसिस और स्लीकनेस के लिए मानक त्रुटि के रूप में जाना जाने वाला एक आँकड़ा देते हैं। यह एक सरल अंगूठे के नियम को लागू करने की अनुमति देता है। यदि आप किसी भी स्कोर को उसकी मानक त्रुटि से विभाजित करते हैं और परिणाम ँ1.96 से अधिक है, कि उस आंकड़े के संबंध में डेटा सामान्य नहीं है । पूर्णतः सामान्य वितरण के लिए चिकनापन और कर्टोसिस का मान क्रमशः 0 और 0.263 है। लेकिन चिकनाई का मान ँ1 के बीच हो सकता है, और कर्टोसिस का मान ँ1.96 के बीच हो सकता है।

कैरियर परिपक्वता स्कोर

कैरियर परिपक्वता के लिए दृष्टिकोण का माध्य 30.09 था और मानक विचलन 6.476 था। कैरियर परिपक्वता के लिए योग्यता हेतु माध्य और मानक विचलन का मान क्रमशः 27.19 और 9.781 पाया गया। तालिका 4 में दर्ज परिणामों के आधार पर, कैरियर परिपक्वता स्कोर के लिए दृष्टिकोण का वितरण थोड़ा नकारात्मक रूप से विषम पाया गया। कैरियर परिपक्वता के लिए दृष्टिकोण के लिए चिकनाई के गुणांक का मूल्य –0.137 था जो नगण्य और सांख्यिकीय रूप से महत्वहीन होने की हद तक छोटा था। कर्टोसिस का गुणांक यानी –0.457 भी सांख्यिकीय रूप से महत्वहीन पाया गया। कैरियर परिपक्वता स्कोर के लिए योग्यता का वितरण थोड़ा सकारात्मक रूप से विषम पाया गया। चिकनाई के गुणांक का मान सांख्यिकीय रूप से महत्वहीन था। कैरियर परिपक्वता के लिए योग्यता के लिए कर्टोसिस के गुणांक का मूल्य –0.860 था। कर्टोसिस का मूल्य एक सपाट कार्मिक वितरण का संकेत देता है, लेकिन समूह समरूप था और मूल्य सांख्यिकीय रूप से महत्वहीन होने के बिंदु तक काफी छोटा था।

तालिका 4: कैरियर परिपक्वता के लिए दृष्टिकोण का स्तर

नज़रिया	कैरियर परिपक्वता के लि	छात्रों की संख्या	प्रतिशत (%)

के लिए			
	उच्च	93	12.4
आजीविका			
	औसत	284	37.86
परिपक्वता			
	कम	373	49.73

तालिका 1 वरिष्ठ माध्यमिक छात्रों की कैरियर परिपक्वता के प्रति दृष्टिकोण के स्तर को बताती है। तालिका 4 से स्पष्ट है कि 12.4 प्रतिशत वरिष्ठ माध्यमिक छात्रों में कैरियर परिपक्वता के प्रति उच्च स्तर का दृष्टिकोण था। 37.86 प्रतिशत वरिष्ठ माध्यमिक छात्रों में औसत स्तर था, जबकि 49.73 प्रतिशत वरिष्ठ माध्यमिक छात्रों में कैरियर परिपक्वता के प्रति निम्न स्तर का दृष्टिकोण था।

तालिका 5 : कैरियर परिपक्वता के लिए योग्यता का स्तर

कैरियर परिपक्वता के लिए योग्यता का स्तर	आत्म मूल्यांकन		व्यावसायिक जानकारी		लक्ष्य चयन		योजना		समस्या को सुलझाना	
	एन	%	एन	%	एन	%	एन	%	एन	%
उच्च	73	9.74	60	8.00	24	3.21	21	2.80	51	6.8
औसत	171	22.80	218	29.06	227	30.26	237	31.60	282	37.6
कम	506	67.46	472	62.94	499	66.53	492	65.60	417	55.6

तालिका 5 वरिष्ठ माध्यमिक छात्रों की कैरियर परिपक्वता के लिए योग्यता के स्तर को बताती है। योग्यता परीक्षण में पाँच भाग होते हैं। आत्म–मूल्यांकन, व्यावसायिक जानकारी, लक्ष्य चयन, योजना और लक्ष्य चयन। तालिका 5 से देखा जा सकता है कि केवल 9.74 प्रतिशत वरिष्ठ माध्यमिक छात्रों में आत्म–मूल्यांकन का उच्च स्तर था, 22.80 प्रतिशत छात्रों में आत्म–मूल्यांकन का औसत स्तर था और 67.46 प्रतिशत छात्रों में आत्म–मूल्यांकन का स्तर निम्न था। व्यावसायिक जानकारी के क्षेत्र में 8 प्रतिशत विद्यार्थी उच्च श्रेणी में, 29.06 प्रतिशत विद्यार्थी औसत तथा 62.94 प्रतिशत विद्यार्थी निम्न श्रेणी में आते हैं। तीसरा क्षेत्र लक्ष्य चयन था जिसमें केवल 3.21 प्रतिशत विद्यार्थियों का स्तर उच्च पाया गया, 30.26 प्रतिशत विद्यार्थियों का औसत स्तर पाया गया जबकि 66.53 प्रतिशत विद्यार्थियों का लक्ष्य चयन निम्न स्तर का पाया गया। नियोजन क्षेत्र में 2.80 प्रतिशत विद्यार्थियों का स्तर उच्च, 31.60 प्रतिशत विद्यार्थियों का औसत स्तर तथा 65.60 प्रतिशत वरिष्ठ माध्यमिक विद्यार्थियों का नियोजन स्तर निम्न पाया गया। 6.8 प्रतिशत वरिष्ठ माध्यमिक छात्रों में समस्या समाधान का उच्च स्तर था, 37.60 प्रतिशत छात्रों में योजना बनाने का औसत स्तर था और 55.60 प्रतिशत वरिष्ठ

माध्यमिक छात्रों में समस्या समाधान का स्तर निम्न था। उच्च स्तर पर छात्रों का प्रतिशत अपेक्षाकृत कम था, छात्र विभिन्न स्तरों पर काफी वितरित हैं। इसलिए, यह परिकल्पना कि श्वरिष्ठ माध्यमिक छात्रों में करियर परिपक्वता के लिए उनकी क्षमता के स्तर में भिन्नता होती हैश स्वीकार की जाती है।

निष्कर्ष

षसीनियर सेकेंडरी स्कूल के छात्रों की भावनात्मक परिपक्वता, निर्णय लेने की क्षमता और आत्म–प्रभावकारिता के संबंध में कैरियर की परिपक्वताष शीर्षक वाली समस्या का चयन इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए एक विशिष्ट शैक्षणिक महत्व था कि सीनियर सेकेंडरी स्तर स्कूली शिक्षा का अंतिम चरण है। बच्चे का. यह भी किशोरावस्था की अवस्था है; महान श्तनाव और तूफ़ानश का चरण। शास्त्रीय दृष्टिकोण किशोरों को मुख्य रूप से विकासात्मक अराजकता और दबाव में रखता है। इस स्तर पर, स्ट्रीम का विविधीकरण होता है और बच्चा सबसे गंभीरता से अपने करियर विकल्पों की तलाश शुरू कर देता है। इसलिए, सिद्धांतकारों, मनोवैज्ञानिकों और कैरियर विकास शोधकर्ताओं ने किशोरों की समग्र विकास आवश्यकताओं पर अधिक ध्यान देना शुरू कर दिया है। सही करियर विकल्प का चयन किसी भी व्यक्ति के जीवन में महत्वपूर्ण निर्णय होता है, क्योंकि करियर न केवल वित्तीय स्थिरता प्रदान करता है, बल्कि किसी भी व्यक्ति के लिए व्यक्तिगत खुशी और संतुष्टि का स्रोत भी होता है, जो उसे खुशी और शांति में बढ़ने की अनुमति देता है।

संदर्भ

[1] ऐनी, एफ. (2015)। एक वर्ष से अधिक समय तक काम करने की स्थिति में, एसएमए नेगेरी 2 सप्ताह के अंत में।

[2] अरजंगी, आर. (2017)। पहचान का उद्देश्य लाभ के लिए भुगतान करना है। साइकोलॉजीरू जर्नल पेमिकिरन डैन पेनेलिटियन साइकोलॉजी, 22(1), 28–35

[3] अरजंगी, आर. (2015)। स्टडी पेंडाहुलुआन पेंगेंबंगन करिर एस्पिरसी मेललुई मेटोड माइंड मैप। सेलामाटकन इंडोनेशिया अनटुक इंडोनेशिया बर्करैक्टर में (पीपी. 21–28)। सेमारंगरू यूनिवर्सिटास इस्लाम सुल्तान अगुंग सेमारंग।

[4] अजवर, एस. (2)। मेटोड पेनेलिटियन। योग्यकार्तारू पुस्तक पेलजर बोर्डिन (1984), निर्णय लेने की शैली और स्व संकल्पना। ऑस्ट्रेलियाई मनोवैज्ञानिक, 26.पीपी–55–58

[5] कैप्रारा, जी.वी. (2000) स्कूलों में समस्या–समाधान और संघर्ष समाधान की पुनर्संकल्पना करना। एक बहु–विषयक परिप्रेक्ष्य, 14(2), 84–90

[6] डार्गो, जे.एम. (2004) गैर–पारंपरिक कॉलेज के छात्रों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच संबंध। ख्ऑनलाइन दस्तावेज़,। यहां उपलब्ध हैरूश ीजजचरू// ्.मपबवदेवतजपनउ.वतह/कपेमतजंजपवद ेइजतंजबे/कतंहव.ीजउस

[7] डूड्स, एच. (2002) अपराधी युवाओं के बीच अकादमिक सुधार, तनाव और आत्म–प्रभावकारिता। विकलांगताएँ और हानियाँ, 16(1), 19–28.

[8] बंडुरा (1986) और गिस्ट (1987), घर और स्कूल में कनेक्शन और विनियमन; किशोरों के लिए उपलब्धि में वृद्धि की भविष्यवाणी। जर्नल ऑफ एडोलेसेंट रिसर्च, 19(4), 405–427

[9] निस्बेट और रॉस (1980) उपलब्धि लक्ष्य, अध्ययन रणनीतियाँ, और परीक्षा प्रदर्शनरू एक मध्यस्थता विश्लेषण। जर्नल ऑफ़ एजुकेशनल साइकोलॉजी, 91(3), 549–563A https:@@doi-org@10-1037@0022&0663-91-3-549

[10] फादिला, डी. आर. (2015)। पेंगरुह इफिकसी दिरी, पोला असुह, डेन केलेकाटन तेरहादाप केसुलिटन पेंगम्बिलन केपुटुसन करिर सिसवा एसएमए नेगेरी 29 जकार्ता। http:@@repository-uinjkt-ac-id@dspace@bitstream@123456789@44016@1@DINI RIZKY FADHILAH&FPSI-pdf

[11] गति, आई., क्रॉस्ज़, एम., और ओसिपोव, एस. एच. (1996)। कैरियर निर्णय लेने में कठिनाइयों का वर्गीकरण। जर्नल ऑफ़ काउंसलिंग साइकोलॉजी, 43(4), 510–526। https:@@doi-org@10-1037@0022&0167-43-4-510

[12] रेडमंड (2010) हाई स्कूल के छात्रों के करियर निर्णय लेने की प्रक्रियारू एक विकल्प का एक अनुदैर्ध्य अध्ययन। जर्नल ऑफ़ वोकेशनल बिहेवियर, 68(2), 189–204 https:@@doi-org@10-1016@j-jvb-2005-08-004

[13] जर्मेइज़, वी., और वर्चुएरेन, के. (2006)। हाई स्कूल के छात्रों के करियर निर्णय लेने की प्रक्रियारू अध्ययन विकल्प कार्य सूची का विकास और सत्यापन। जर्नल ऑफ़ करियर असेसमेंट, 14¼4½] 449&471 https:@@doi-org@10-1177@1069072706286510

[14] लेविन, एन., ब्राउनस्टीन–बर्कोविट्ज़, एच., लिपशिट्स–ब्राज़ीलर, वाई., गति, आई., और रॉसियर, जे. (2020)। देश, लिंग, आयु और निर्णय की स्थिति के अनुसार कैरियर निर्णय लेने की कठिनाइयों की प्रश्नावली की संरचना का परीक्षण करना। जर्नल ऑफ़ वोकेशनल बिहेवियर, 116– https:@@doi-org@10-1016@j-jvb-2019-103365

[15] डायनर (2000) सामान्य आत्म–प्रभावकारिता पैमाने के स्वीडिश अनुवाद का सत्यापन। जीवन अनुसंधान की गुणवत्ता, 21(7), 1249–1253 https:@@doi-org@10-1007@ s11136&011&0030&5

[16] टैन्सले, डी.पी., जोम, एल.एम., हासे, आर.एफ., और मार्टेंस, एम.पी. (2007)। कॉलेज के छात्रों के करियर निर्णय लेने पर संदेश निर्माण के प्रभाव। जर्नल ऑफ़ कैरियर असेसमेंट, 15(3), 301–316 https:@@doi-org@10-1177@1069072707301204